# रूहानी दुरूदे फ़ातेमी व आयाते बरमला शरीफ़ह

व दुरूदे चहेल मीम (37)

मुरत्तिब

मोहम्मद अज़ीज़ सुल्तान नाचीज़

۷۸۶ ۹۲

# रूहानी दुरूदे फ़ातेमी व आयाते बस्मला शरीफ़ह

# व दुरूदे चहेल मीम

37



۷۸۶/۹۲

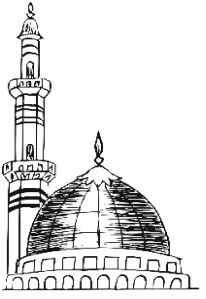

نقش تحفۂ روحانی وحل المشکلات

مَعَ اسْمِ اللهِ الْمَلِكِ السَّلٰمِ

ص م ح م د لی اللہ علیہ وسلم

ص ح م د م لی اللہ علیہ وسلم

ص م د م ح لی اللہ علیہ وسلم

ص د م ح م لی اللہ علیہ وسلم

اس نقش کو دیکھنے والے کی ہر مشکل حل ہوگی انشاء اللہ

## मुरत्तिब

बमौक़ा रबीउ़ल्अव्वल 1440 हि0

बफ़ैज़े रूहानी सय्यिदुना मोह़युद्दीन व सय्यिदुना मोईनुद्दीन व ह़ज़रात मख़्दूमीन सादात चौदहों पीराँ رضی اللہ عنہم

मोह़म्मद अ़ज़ीज़ सुल्त़ान नाचीज़

# दुरूदे चहेल मीम (३७)

بِسْمِ اللهِ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِنَا وَ

مَوْلٰنَا وَمَلْجَانَا وَمَاوَانَا مَحْبُوْبِكَ الْاَوَّلِ

وَالْاٰخِرِ وَ مَظْهَرِكَ الظَّاهِرِ وَالْمَخْفِيِّ وَنُوْرِكَ

الْمَحَبَّةِ الْقَدِيْمَةِ الَّذِىْ ظَهَرَ فِىْ مَكَّةَ نُوْرُهٗ

الَّذِىْ جَآءَ مِنْ اٰدَمَ اِلٰى صُلْبِ عَبْدِ اللهِ وَبَعْدَهٗ

اِلٰى بَطْنِ السَّيِّدَةِ اٰمِنَةَ فَوِلَادَتُهٗ كَانَتْ

صَبَاحًا مِّنَ الْفَجْرِ وَحِيْنَئِذٍ تُصَلِّىْ وَ

مَلٰئِكَتُكَ وَكُلٌّ مِّنَ الْمَوْجُوْدَاتِ يُصَلُّوْنَ

عَلَيْهِ وَهُوَ نُوْرُكَ الدَّائِمُ وَالْقَائِمُ مُحَمَّدٌ

رَّسُوْلُ اللهِ وَعَلَى السَّيِّدِ عَبْدِاللهِ وَالسَّيِّدَةِ

اٰمِنَةَ وَاٰلِ مَحْبُوْبِكَ وَاَهْلِ بَيْتِهِ الْمُكَرَّمَاتِ

وَاَزْوَاجِهِ الْمُطَهَّرَاتِ وَاَصْحَابِهِ الْعِظَامِ

وَجَمِيْعِ الْاَنْبِيَاءِ وَالشُّهَدَاءِ وَالْاَوْلِيَاءِ

الْكِرَامِ وَمُحْيِ الدِّيْنِ وَمُعِيْنِ الدِّيْنِ

وَاَحْمَدَوَلِيِّ اللهِ وَحَوَارِيِّ وَلِيِّ اللهِ وَكُلِّ اُمَمِهٖ

صَلَاةً تَجْعَلُنَا بِهَا مُتَّقِيًّا وَّتَرْزُقُنَا بِهَا مَحَبَّتَكَ

وَمَحَبَّةَ حَبِيْبِكَ وَتَغْفِرُبِهَا لِاُمَمِ حَبِيْبِكَ○

**तर्जमाः-** अल्लाह के नाम से शुरूअ़ और खूब खूब दुरूदो सलाम नाज़िल हो हमारे सरदार हमारे आक़ा और हमारे मल्जा व मावा तेरे अव्वलो आख़िर मह़बूब पर, तेरे ज़ाहिर व बात़िन मज़्हर पर, तेरे क़दीम मोह़ब्बत के नूर पर, जो मक्का में ज़ाहिर हुए जिनका नूर आदम से होते हुए सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह की पुश्ते पाक में आया उस के बअ़द सय्यिदा आमिना के शिकमे पाक में आया पस आप की विलादत सुबह़ सवेरे हुई उस वक़्त तू और तेरे फ़िरिश्ते और काइनात के सब उनपर दुरूद पेश कर रहे थे और वह तेरे दाएम क़ाएम नूर मोह़म्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं। (और खूब दुरूदो सलाम नाज़िल हो) सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह पर, सय्यिदा आमिना पर, तेरे मह़बूब की आल पर, आप ﷺ की मोकर्रम अहले बैत पर, सुथरी अज़्वाज पर, सह़ाबए एज़ाम पर, तमाम अम्बिया व शोहदा पर और औलियाए किराम पर, शैख़ मुह़युद्दीन पर, ख़्वाजा मोईनुद्दीन पर और मख़दूम अह़मद

वलीयुल्लाह पर, और आप के अस्ह़ाबे रूह़ानी पर आप ﷺ की सारी उम्मत पर ऐसा दुरूद कि जिस की बरकत से तू हमें मुत्तक़ी बनादे और हमें अपनी और अपले ह़बीब की मोह़ब्बत अ़त़ा करदे और अपने ह़बीब की उम्मतों को बख़्श दे।

**फ़ज़ीलतः-** जो शख़्स इस दुरूद को रोज़ाना ४०/१२/७ बार पढ़ेगा अल्लाह उसे मुत्तक़ी बना देगा और उस का फ़ैज़ उसकी नस्लों में जारी होगा, उस के लिए नेअ़मतों के दरवाज़े खोल दिये जाएंगे, उसे अल्लाहो रसूल की कामिल मोह़ब्बत और रिज़ा ह़ासिल होगी क़ज़ाए ह़ाजत के लिए ७०/बार पढ़कर दुआ़ करे तो दुआ़ क़बूल होगी। इन्शाअल्लाहु तआ़ला।

# फ़ज़ाइले दुरूदे फ़ातिमी

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَبِحَمْدِهٖ
وَبِشُكْرِهٖ وَبِهٖ نَسْتَعِيْنُ ○
بِسْمِ اللّٰهِ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِنَا هُوَ
مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ ○

तमाम हम्दो शुक्र उस अल्लाह के लिए है जिसने लाइलाह इल्लल्लाहु मोहम्मदुर्रसूलुल्लाह ﷺ के पाक कलेमात को यक़ीने कामिल के साथ क़ल्ब में जागुज़ीं फरमाया और ख़ूबख़ूब दुरूदोसलाम नाज़िल हो हमारे आक़ा व मौला अल्लाह के ह़बीब दोनों आ़लम के त़बीब सारी जहान के लिए रह़मत मोहम्मद ﷺ पर और आप ﷺ के जुमला अह़बाबो अक़ारिब पर दाइमी तौर पर।

पेशे नज़र रूह़ानी दुरूदे फ़ातिमी अ़वालमे

रूहानिया के जुम्ला फ़ुयूज़ो बरकात पर मुश्तमिल है जो कि सय्यिदी व मौलाई रूही व क़ल्बी शैख़ अ़ब्दुल्क़ादिर जीलानी के रूहानी फैज़ और सय्यिदी व मुर्शिदी सय्यिदुना मख़्दूम अह़मद वलीयुल्लाह जीलानी बग़दादी की दुआ़ओं से ह़ासिल हुई ये दुरूदे रूहानी फ़ातिमी लौहे़ मह़फूज़ में मुन्दरिज है जिसे रूहानी तौर से सूफ़ियाएकिराम के पाकीज़ह कुलूब से होते हुए इस नाचीज़ को अ़ता हुई, इस दुरूद के बेशुमार फ़ुयूज़ो बरकात हैं जिसे क़लम बन्द नहीं किया जा सकता इस दुरूद को कसरत से फ़िरिश्ते विर्द में रखते हैं इस दुरूदे पाक की निस्बत हुजूर नबीये करीम ﷺ की लाडली जन्नती औ़रतों की सरदारन ख़ातूने जन्नत सय्यिदह फ़ातिमा ज़हरा रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से है इस दुरूद में काइनाते कलिमात और अ़वालमे हुरूफ़ का फ़ैज़ ब दर्जए अतम शामिल है इस दरूद को ख़ातूने जन्नत के इस्मे पाक 'फ़ातिमा' में मौजूद हुरूफ़ के मुताबिक़ अअ़दाद का लिह़ाज़ किया गया है चुनान्चे इस्मे

फ़ातिमा के अव्वले ह़रफ़ फ़ाए मकतूबी को उसके अअ़दाद ८० के मुताबिक़ सिर्फ़ ८० बार ज़िक्र किया गया है जो कि अल्लाह के कलाम ''फ़ातिरुस्समावाति वल्अर्दि'' के कामिल फ़ैज़ की तरफ़ इशारह कर रहा है जो शख़्स इस दुरूद को रोज़ाना ८० बार पढ़ने का मअ़मूल बनाएगा वह आसमानो ज़मीन में मौजूद जुम्ला अश्या का मुशाहिदा करेगा और उसे आस्मानो ज़मीन का ख़ैरे कसीर अ़ता किया जाएगा और इस्मे फ़ातिमा का दूसरा ह़र्फ़ अलिफ़ है इस दुरूद में अलिफ़े मकतूबी के अ़दद १ के मुताबिक़ सिर्फ़ १ बार मज़्कूर है जो कि आयते करीमा ''अल्लाहु नूरुस्समावाति वल्अरदि'' से कामिल मुनासबत रखता है जो शख़्स इस दुरूद को अ़ददे फ़ाए मक्तूबी व अ़ददे अलिफ़े मक्तूबी कि जिस का मजमूआ़ ८१ है उस के मुताबिक़ रोज़ाना ८१ बार पढ़ेगा अल्लाह उसे इस दुरूद की बरकत से अपनी और अपने ह़बीब ﷺ की ख़ुश्नूदी अ़ता करेगा उस का क़ल्ब और

उस का ज़ाहिरो बातिन नूरे मुस्तफ़ा से मोनव्वर हो जाएगा और वह ख़ास्सुल्ख़्वास के गिरोह में शुमार किया जाएगा उस से जुम्ला हिजाबात उठालिए जाएंगे वह जुम्ला हक़ाइक़ का मुशाहदा करने वाला होगा उसे इल्मे लदुन्नी की दौलत अता होगी। इस्मे फ़ातिमा का तीसरा हर्फ ता है ताए मक्तूबी के अअदाद ६ हैं इस दुरूद में ताए मक्तूबी सिर्फ़ ६ बार आया है जो कि ता सीम मीम के पाक कलमात के फुयूज़ो बरकात और अस्रारो रूमूज़ को अपने अन्दर लिए हुए है जो शख़्स अददे फ़ा, अलिफ़ और ता के मुताबिक़ (यअनी ६० बार पढ़ेगा) उसे मालिकुल्मुल्क के खुसूसी अतीयात और नवाज़िशों से माला माल किया जाएगा यह अदद इस्मे मालिक के अदद से मुनासबत रखता है जो शख़्स इस दुरूद को ६० बार मअमूल में रखेगा तो अल्लाह तआला उसे अपने मुल्क की बादशाहत और इज़्ज़तो करामत अता फ़रमाएगा, इस्मे फ़ातिमा का चौथा हर्फ़ मीम है मीमे मक्तूबी के अअदाद

४० हैं इस दुरूद में मीम का ज़िक्र सिर्फ़ ४० बार आया है जो कि आयते करीमा''व कफ़ाबिल्लाहि शहीदम्मुहम्मदुर रसूलुल्लाहि'' की किफ़ायत और शहादत को शामिल किए हुए है जो शख़्स इस दुरूद को अ़ददे फ़ा, अलिफ़, ता़, और मीम को जमअ़ कर के १३० बार मअ़मूल में रखेगा तो उसे फ़ना फ़िर्रसूल और फ़ना फ़िल्लाह के मक़ामात ह़ासिल होंगे उस पर ऐसे मुकाशिफ़ात ज़ाहिर होंगे कि वह ब्यान न कर सकेगा उस की हर दुआ़ क़बूल होगी और उस की दुआ़ से बेशुमार लोगों को जन्नत में दाख़िल किया जाएगा वह बिला ह़िसाबो किताब वाले गिरोह में शामिल होगा, और इस्मे फ़ातिमा का पाँचवाँ ह़र्फ़ हा है जिसके अ़दद ५ हैं इस दुरूद में सिर्फ़ पाँच बार आया है (वाज़ेह़ हो कि ताए मुदव्वरा हाए हव्वज़ के हुक्म में है और यह दोनों अ़दद में बराबर हैं) जो कि सूरह ह़श्र में आख़िरी तीन आयतों का कामिल फ़ुयूज़ो बरकात लिए हुए है वह तीन आयतें यह हैं:-

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○

هُوَاللّٰهُ الَّذِیۡ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَعٰلِمُ الۡغَیۡبِ

وَالشَّهَادَةِ هُوَالرَّحۡمٰنُ الرَّحِیۡمُ ○ هُوَاللّٰهُ

الَّذِیۡ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الۡمَلِكُ الۡقُدُّوۡسُ السَّلٰمُ

الۡمُؤۡمِنُ الۡمُهَیۡمِنُ الۡعَزِیۡزُ الۡجَبَّارُ الۡمُتَكَبِّرُ

سُبۡحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا یُشۡرِكُوۡنَ ○ هُوَ اللّٰهُ الۡخَالِقُ

الۡبَارِئُ الۡمُصَوِّرُ لَهُ الۡاَسۡمَآءُ الۡحُسۡنٰی یُسَبِّحُ

لَهٗ مَافِی السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ وَهُوَ الۡعَزِیۡزُ

الۡحَكِیۡمُ ○

जो शख़्स इस दुरूद को इस्मे फ़ातिमा के अअ़दाद १३५ के मुताबिक़ रोज़ाना अपने मअ़मूल में १३५ बार रखेगा उसे कुर्आने पाक के हर ह़र्फ़ के फ़ुयूज़ो बरकात और उनके इल्मो ह़िक्मत से नवाज़ा जाएगा उस का ज़िक्र अल्लाहो रसूल और अहले बैत की बारगाह में किया जाएगा और उस मजलिस में उसे ज़ाहिरो बातिन तौर से हाज़िर होने की तौफ़ीक़ मिलेगी वह ऐसे ऐसे अस्रारो रूमूज़ से वाक़िफ़ होगा कि ख़ुद हैरत में रहेगा वह मुस्तजाबुद्दअ़वात होगा उसकी दुआ़ कभी रद न की जाएगी और वह आसमानो ज़मीन के ज़ाहिरो बातिन में रूह़ानी तौर से सैर करने वाला होगा उस की सोह़बत में बैठने वाले को अल्लाह बख़्श देगा उस पर जुम्ला अ़वालिमे रूह़ानिया और अ़र्श से फ़र्श तक के सारे अह़वालो वाक़िआ़त खोल दिए जाएंगे।

इस दुरूद को रोज़ाना १३५ बार या ६ बार पढ़ने का मअ़मूल बनाए और जो शख़्स इस दुरूद को १

जुम्अ़ा से दूसरे जुम्अ़ा तक १३५ बार पढ़ कर मोकम्मल करेगा और इस मअ़मूल को बर्क़रार रखेगा तो वह भी इन तमाम इन्अ़ामात का ह़क़दार होगा। ख़ुलास़ा यह कि यह दुरूद जुम्ला रूह़ानी ख़ज़ानों से मअ़मूर है मौला तअ़ाला हम सब को इस दुरूदे पाक को पढ़ने और इस के फ़ुयूज़ो बरकात से माला माल होने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए आमीन बिजाहि सय्यिदिल मुर्सलीन व आलिहि अजमई़न ।

## अस़्स़लातुल्फ़ात़िमीयतु

رَبِّیْ بِسْمِكَ وَبِحَمْدِكَ رَبِّیْ وَحْدِیْ صَمَدِیْ لَمْ

يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ وَلَيْسَ كَمِثْلِ رَبِّیْ شَيْئٌ صَلِّ

وَسَلِّمْ وَكَرِّمْ وَرَحِّمْ وَدَيِّمْ رَحْمَتَكَ

بِدَيْمُوْمَتِكَ عَلٰى حَبِيْبِكَ وَنَبِيِّكَ وَ بِنْتُ
رَسُوْلِكَ بَتُوْلٌ وَقْلَ فِيْ حَدِيْثٍ فَاطِمَةُ بَضْعَةٌ
مِّنِّيْ وَبِنْتُ رَسُوْلِكَ سَيِّدَةُ نِسْوَةِ جَنَّتٍ
شَرَفُ حَبِيْبِكَ فَخْرُ مُصْطَفٰكَ وَوَصْفُ رَؤْفِكَ
وَصَفْوُ صَفْوَتِكَ وَفَضْلُ مُفَضِّلِكَ وَفَيْضِ
مُفَيِّضِكَ وَعُرْفُ مَعْرِفَتِكَ فِيْ مَقْعَدِ صِدْقٍ
عِنْدَ مَلِيْكٍ مُّقْتَدِرٍ وَنُوْرِ فَلَكِ كُلِّ فَلَكٍ
وَكُلٌّ فِيْ فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ وَفَضِيْلَتِكَ وَفَخْرِ
كَوْنِكَ وَفَتْحِ فُتُوْحِكَ وَمُفَتِّحِ مَوْرِدِ رَحْمَتِكَ

وَرَؤْفِكَ وَفِكْرِكَ وَنَفْسِ نُفُوْسِ خَلْقِكَ

وَتَفْسِيْرِ كَ وَفَيْضِ كُنْ فَيَكُوْنُ وَعَفِيْفِكَ

وَعَفْوِكَ وَحَنِيْفِكَ وَ كَشْفِتِ ضُرٍّ وَرَفِيْعِ

دَرَجٰتٍ وَفَيْضِ كٓهٰيٰعٓصٓ وَحٰمٓعٓسٓقٓ تَنْزِيْلٌ

مِّنْ حَكِيْمٍ حَمِيْدٍ وَكُلُّ صَغِيْرٍ وَّكَبِيْرٍ

مُّسْتَطَرٌ وَجَلِيّكَ وَخَفِيّكَ وَلُطْفِ لَطِيْفِكَ

وَعَطُوْفِكَ وَمَغْفِرَتِكَ وَرَفِيْقِكَ وَشَفِيْقِكَ

وَكَفِيْلِ كُلِّ كَوْنِكَ وَصَفِيّكَ وَ وَفِيّكَ

وَكَفِيّكَ وَصَفْوَتِكَ وَوَصْفِكَ وَصِفَتِكَ

وَحِفْظِكَ وَعُرْفِكَ وَفَيْضِ وَحْدَتِكَ

وَصَمَدِيَّتِكَ وَفَيْضِ فُتُوْحِكَ وَنُوْرِ فَرْشِكَ

وَعَرْشِكَ وَفَضْلِكَ وَوَصْفُ رَسُوْلِكَ مَحْمُوْدٌ

وَفَصِيْحٌ وَعَفِيْفٌ وَشَرِيْفٌ وَعَفُوٌّ وَلُطْفٌ

وَلَطِيْفٌ وَفَضْلٌ وَذُوْسَيْفٍ وَ ذُوْفَيْضٍ وَذُوْ

فَخْرٍ وَذُوْ فَقْرٍ وَذُوْفَتْحٍ وَشَفِيْعٌ وَصَفِيٌّ وَوَفِيٌّ

وَ كَفِيٌّ وَطٰسَ وَرَؤُفٌ حَبِيْبُكَ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُكَ

وَعَلٰى مَنْ فِيْ عِلْمِكَ وَرَسُوْلِكَ بِعَدَدِ كُلِّ

مَعْلُوْمٍ لَّكَ○

तर्जमाः- ऐ मेरे रब तेरेही नाम से शुरूअ़ है और तेरेही लिए तमाम तअ़रीफ़ है। मेरा रब तन्हा है, मेरा रब बेनियाज़ है वह किसी से पैदा नहीं और न उस की कोई औलाद है और मेरे रब के मिस्ल की त़रह कुछ नहीं तू ख़ूब ख़ूब दुरूदो सलाम और करमो रह़मत नाज़िल फ़रमा और अपनी रह़मत को अपनी शाने दाएमी के साथ दाएम फ़रमा अपने ह़बीब पर, अपने नबी पर, कि तेरे रसूल की लाडली सय्यिदह बतूल हैं तेरे ह़बीब ﷺ ने उनके बारे में फ़रमाया कि फ़ात़िमह मेरा लख़्ते जिगर है और तेरे रसूल की लाडली तमाम जन्नती औ़रतों की सरदारन हैं, तेरे ह़बीब ﷺ की बुजुर्गी हैं, तेरे मुस्त़फ़ा का फ़ख़्र हैं, तेरे मेहरबान की ख़ूबी हैं, तेरे ख़ालिस़ मोह़ब्बत की ख़ालिस़ चाहत हैं, तेरे फ़ज़ीलत वाले का फ़ज़्ल हैं, तेरे फ़ैज़ बख़्श का फ़ैज़ हैं, तेरी मअ़रिफ़त की पहचान हैं, सच्चाई की निशश्त में इ़ज़्ज़तो कुदरत वाले बादशाह के हुज़ूर हैं (और खूब दुरूदो सलाम नाज़िल

हो) तमाम फ़लकों के फ़लक के नूर पर, सब के सब फ़लक में घूम रहे हैं और तेरी फ़ज़ीलत पर, तेरी काएनाम के फ़ख़्र पर, तेरी कुशादगी की कुशादह पर, और तेरी रह़मत का दरवाज़ा खोलने वाले पर, तेरे मेरहबान पर, तेरी फ़िक्र पर, तेरी मख़लूक़ की जानों की जान पर, तेरी तफ़्सीर पर, कुन फ़ यकून के फ़ैज़ पर, तेरे पारसा पर, तेरी मुआ़फ़ी पर, तेरे ख़ालिस़ बन्दा पर, तकलीफ़ों को दूर करने वाले पर, दरजात को बुलंद करने वाले पर, काफ़ हा या ऐन स़ाद और ह़ा मीम ऐन सीन क़ाफ़ के फ़ैज़ पर, ह़िक्मत वाले खूब तअ़रीफ़ किए हूए की जानिब से उतारा गया है, और हर छोटी सी छोटी बड़ी सी बड़ी चीज़ लिखी हुई है, तेरे ज़ाहिर पर, तेरे पोशीदह पर, तेरी मेहरबानी की मेहरबानी पर, तेरी नरमी पर, तेरी बख़्शिश पर, तेरे दोस्त पर, तेरे शफ़्क़त करने वाले पर, तेरे सारे जहान की किफ़ालत करने वाले पर, और तेरे उ़म्दह दोस्त पर, तेरे वफ़ा शआ़र पर,

तेरी किफ़ायत पर, तेरे ख़ालिस दोस्त पर, तेरी शान पर, तेरी सिफ़त पर, तेरी हिफ़ाज़त पर, तेरी पहचान पर, तेरी यक्ताई और बे नयाज़ी के फ़ैज़ पर, तेरी कुशादगी के फ़ैज़ पर, तेरे फ़र्शो अ़र्श के नूर पर, तेरी बुजुर्गी पर, तेरे रसूल का वस्फ़ यह है कि वह तअ़रीफ़ किया हुवा है, फ़साहत वाले हैं, पाक दामन हैं, कमाले शराफ़त वाले हैं मुआ़फ़ करने वाले हैं, मेहरबान हैं, मेहरबानी करने वाले हैं, कमाले फ़ज़्ल हैं, तलवार वाले हैं, फ़ैज़ बख़्श हैं, मक़ामे फ़ख़्र वाले हैं, मक़ामे फ़क़्र वाले हैं, मक़ामे फ़तह़ वाले हैं, सिफ़ारिश करने वाले हैं, उ़म्दह दोस्त हैं, शाने वफ़ा वाले हैं, शाने किफ़ायत वाले हैं, और त़ा सीन हैं और बहुत मेहरबान तेरे ह़बीब ﷺ तेरे रसूल हैं और उन सब पर दुरूदो सलाम नाज़िल हो जो तेरे और तेरे रसूल के इ़ल्म में हैं तेरी तमाम मअ़लूम तअ़दाद के मुत़ाबिक़।

# फ़ज़ाइले रूह़ानी दुरूद व दुआ़ व आयाते बस्मला शरीफ़ह

अल्लाह तबारक व तआ़ला का बेह़द ह़म्दो शुक्र है और उस के ह़बीब ﷺ का बे शुमार एह़सानो करम और फ़ज़्लो ए़नायत है कि पेशे नज़र रूह़ानी दुरूदो दुआ़ व आयाते बस्मला शरीफ़ह हुज़ूर गौसुल अअ़ज़म शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी व ह़ज़रत सय्यिद अह़मद कबीर रेफ़ाई़ व सय्यिदुना मख़्दूम अह़मद वलीयुल्लाह रदि़यल्लाहु अ़न्हुम के फ़ैज़ानो करम से इस नाचीज़ को अ़ता हुई। जो कि हुज़ूर ग़ौसुल अअ़ज़म व हुज़ूर सय्यिद अह़मद कबीर रदि़यल्लाहु अ़न्हुमा अपने मख़्सूस मुरीदीन को अ़ता फ़रमाते थे यह दुरूदो दुआ़ और आयाते बस्मलह शरीफ़ह एक अ़ज़ीम रूह़ानी ख़ज़ाना है जिस को मअ़मूल में लाने वाला अल्लाहो रसूल की हर नाफ़रमानी से महफ़ूज़ होने लगता है और वह दह्हो क़ब्रो ह़श्र में

अल्लाहो रसूल की खुश्नूदी पाने वालों में शुमार किया जाता है जो शख़्स इस रूहानी दुरूदो दुआ व आयाते बस्मलह शरीफ़ह को सुब्हो शाम कस्रत से मअ़मूल में रखेगा तो उसे रूहानी दुनिया की सैर ह़ासिल होगी और उस का ज़ाहिरो बातिन अन्वारे क़ल्बो रूह़ से मोनव्वर होजाएगा उसे नबी करीम ﷺ की अ़ज़ीम शफ़्क़तें ह़ासिल होंगी अगर वह साह़िबे औलाद न हो तो उस के औलाद होगी, बेमुराद हो तो बामुराद होगा नाअहल हो तो अहल में से होजाएगा, अगर मरीज़ को किसी भी चीज़ मस्लन किश्मिश, खुजूर, नमक, पानी पर दम कर के खिलाए तो हर मर्ज़ ये शिफ़ा मिलेगी अगर बअ़दे तहज्जुद से फ़जर की नमाज़ तक पढ़ने का मअ़मूल बनाए तो अम्बिया व औलिया व अफ़्रादे सुल्ह़ा व अत्क़िया और जमाअ़ते सिद्दीक़ीनो शोहदा की अर्वाह़ से मुलाक़ात होगी और उन सब का कामिल फ़ैज़ अ़ता होगा इस को पढ़ने वाला हर बला व मुसीबत और बीमारी से मह़फ़ूज़ होगा उस का

ज़ाहिरो बातिन नफ़्सो शैतान के शरों से महफ़ूज़ होजाएगा उस की ग़ैब से मदद की जाएगी। उस के गिर्द एक नूरानी हिसार होजाएगा जिस से जुम्ला शर वाले अफ़राद उस से ख़ौफ़ ज़दह रहेंगे जो शख़्स चाँद देख कर दूसरे चाँद के निकलने तक ७८६ बार पढ़े इसी तरह हर महीना करे तो अल्लाह उसे कुन फ यकून का कामिल फ़ैज़ अता करेगा उसे इल्मे लदुन्नी और इल्मो हिक्मत के ख़ज़ाने से माला माल किया जाएगा उसे ख़्वाजा ख़िज़्र अलैहिस्सलाम व दीगर औलियाए किराम की ज़ियारत का शरफ़ हासिल होगा उसे इबादत में ज़ौक़ो शौक़ और लज़्ज़त हासिल होगी और का ज़ाहिरो बातिन हर फ़साद से महफ़ूज़ होगा, तमाम ज़हरीले जानवर व दीगर मूज़ी हैवानात उस से मानूस होंगे और वह उनके शरों से महफ़ूज़ होगा अगर किसी को ज़हरीले जानवर ने काट लिया होतो ऐसे मरीज़ को पानी या किसी चीज़ पर दम कर के दे तो फ़ौरन शिफ़ा मिलेगी और वह जिस मरीज़

को शिफ़ा की नियत से निगाह भर कर देखले तो फ़ौन शिफ़ा मिलेगी अगर किसी पर सेह़र या आसेब का असर होतो पानी पर पढ़ कर पिलाए तो फ़ौरन शिफ़ा मिलेगी। ह़ासिले कलाम यह कि इस रूह़ानी दुरूदो दुआ़ व आयाते बस्मलह शरीफ़ह के बेशुमार फ़ज़ाइलो बरकात हैं जो तह़रीर में नहीं आ सकते मअ़मूल में रखने वाला खुद उस का मुशाहिदा करेगा इन्शाअल्लाहु तआ़ला। बारगाहे मौला में दुआ़ है कि मौला तआ़ला हम सब को इस को पढ़ने और इस के फ़ुयूज़ो बरकात से माला माल फ़रमाए आमीन बिजाहि नबीयिल्उम्मीयिल अमीन व आलिही अजमईन।

# रूह़ानी दूरूद व दुआ़ व आयाते बस्मलह शरीफ़ा

بِسْمِ اللهِ جَلِيْلِ الشَّانِ عَظِيْمِ الْبُرْهَانِ

شَدِيْدِ السُّلْطَانِ مَاشَاءَ اللّٰهُ كَانَ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ

مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ

الرَّحِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ وَالْحَمْدُلِلّٰهِ بِسْمِ اللّٰهِ

وَالشُّكْرُ لِلّٰهِ بِسْمِ اللّٰهِ وَالْمِنَّةُ لِلّٰهِ بِسْمِ اللّٰهِ

وَالْقُدْرَةُ لِلّٰهِ بِسْمِ اللّٰهِ وَالْعَظَمَةُ لِلّٰهِ بِسْمِ اللّٰهِ

وَالسُّلْطَانُ لِلّٰهِ بِسْمِ اللّٰهِ وَالْبُرْهَانُ لِلّٰهِ بِسْمِ

اللّٰهِ وَالْكِبْرِيَاءُ لِلّٰهِ بِسْمِ اللّٰهِ وَالْفَخْرُ لِلّٰهِ بِسْمِ

اللّٰهِ وَالْقَهْرُ لِلّٰهِ بِسْمِ اللّٰهِ وَالنِّعْمَةُ لِلّٰهِ بِسْمِ

اللّٰهِ وَالْمَجْدُلِلّٰهِ بِسْمِ اللّٰهِ وَالثَّنَاءُ لِلّٰهِ بِسْمِ

اللهِ وَبِاللهِ وَلَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّابِاللهِ الْعَلِيِّ

الْعَظِيْمِ بِسْمِ اللهِ رَبِّيَ اللهُ حَسْبِيَ اللهُ

تَوَكَّلْتُ عَلَى اللهِ اِعْتَصَمْتُ بِاللهِ لَاقُوَّةَ اِلَّا

بِاللهِ○ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ

اَسْئَلُكَ بِحَقِّ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَ

بِحُرْمَةِ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَبِفَضْلِ

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَبِعَظَمَةِ بِسْمِ

اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَبِجَلَالِ بِسْمِ اللهِ

الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَبِجَمَالِ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ

الرَّحِيْمِ وَبِكَمَالِ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ

الرَّحِيْمِ وَبِذِكْرِ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَبِفِكْرِ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَبِعِلْمِ

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَبِحِكْمَةِ بِسْمِ

اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَ بِمَعْرِفَةِ بِسْمِ اللهِ

الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَبِحَقِيْقَةِ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ

الرَّحِيْمِ وَبِنِعْمَةِ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَبِهَيْبَةِ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَبِمَنْزِلَةِ

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَبِمَلَكُوْتِ بِسْمِ

اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَبِجَبَرُوْتِ بِسْمِ اللهِ

الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَبِكِبْرِيَاءِ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ

الرَّحِيْمِ وَبِثَنَآءِ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَبِبَهَآءِ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَبِكَرَامَةِ

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَبِسُلْطَانِ بِسْمِ

اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَبِبَرَكَةِ بِسْمِ اللهِ

الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَبِعِزَّةِ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ

الرَّحِيْمِ وَبِقُوَّةِ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَبِقُدْرَةِ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

يَا اِلٰهِیْ اِغْفِرْ لِكُلِّ ذُنُوْبِیْ وَاسْتُرْ عُيُوْبِیْ

وَارْزُقْنِیْ حُبَّكَ وَحُبَّ حَبِيْبِكَ اِرْفَعْ قَدْرِیْ

وَاشْرَحْ صَدْرِیْ وَيَسِّرْ اَمْرِیْ وَارْزُقْنِیْ مِنْ

حَيْثُ لَا يُحْتَسَبُ ○ بِفَضْلِكَ وَ كَرَمِكَ يَا مَنْ

هُوَ كَلَامُهٗ كٓهٰيٰعٓصٓ حٰمٓعٓسٓقٓ وَاَسْئَلُكَ بِجَلَالِ

الْعِزَّةِ وَجَلَالِ الْهَيْبَةِ وَ جَبَرُوْتِ الْعَظَمَةِ ○

اَنْ تَجْعَلَنِیْ مِنْ عِبَادِكَ الصَّالِحِيْنَ ○

اَلَّذِيْنَ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ○

بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ ○ وَاَنْ تُصَلِّیَ

عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ ○

وَافْعَلْ لِّیْ کَذَا وَ کَذَا ------ (وافعل لی کے

بعد اپنی حاجت کا ذکر کرے) اَللّٰھُمَّ

اِھْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِیْمَ ○ صِرَاطَ الَّذِیْنَ

اَنْعَمْتَ عَلَیْھِمْ ○ غَیْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَیْھِمْ

وَلَا الضَّآلِّیْنَ ○ آمین ○

بِسْمِ اللّٰہِ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِنَا ھُوَ

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ صَلَاتِیْ وَسَلَامِیْ عَلٰی بَدْرِ

التَّمَامِ اِلٰی یَوْمِ الْقِیٰمَۃِ وَفِیْ طُوْلِ الزَّمَانِ ○

صَلَوٰتُ اللّٰهِ عَلٰى مَنْ لَّهُ الشَّامَةُ ○ عَلَامَةُ

نَبِيِّنَا ○ مُحَمَّدٌ مُظَلَّلٌ بِالرَّحْمَةِ ○ يَاسَيِّدِىْ

مُصْطَفٰى شَيْئًا لِّلّٰهِ يَا سِرًّا مِنْ سِرِّ اللّٰهِ ○

يَاسَيِّدِىْ مُصْطَفٰى شَيْئًا لِّلّٰهِ ○ يَا فَيْضًا مِّنْ

فَيْضِ اللّٰهِ يَا سَيِّدِىْ مُصْطَفٰى شَيْئًا لِّلّٰهِ يَا

نُوْراً مِّنْ نُّوْرِ اللّٰهِ ○ يَا مُتَجَلِّىْ اِرْحَمْ ذُلِّىْ يَا

مُتَعَالِىْ اَصْلِحْ حَالِىْ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ غَوْثًا

وَّمَدَدًا ○ يَا حَبِيْبَ اللّٰهِ يَا عَلَيْكَ الْمُعْتَمَدُ ○

يَا نَبِىَّ اللّٰهِ كُنْ لَنَا شَافِعًا ○ اَنْتَ وَاللّٰهِ شَفِيْعٌ

لَا تُرَدُّ يَا رَبِّ اَنْتَ اللّٰهُ ○ يَسِّرْ لَنَا عِلْمَ لَا اِلٰهَ

اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ حَقًّا وَّصِدْقًا ○

وَصَلِّ عَلٰى اَشْرَفِ نُوْرِ جَمِيْعِ الْاَنْبِيَاءِ

وَالْمُرْسَلِيْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ○

तर्जमाः- अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बुज़ुर्ग शान वाला अ़ज़ीम दलील वाला है ज़बरदस्त ग़ल्बह व सल्तनत वाला है अल्लाह जो चाहता है वही होता है मैं अल्लाह की पनाह लेता हूँ शैतान मरदूद से, अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बड़ा मेहरबान निहायत रह़म वाला है, अल्लाह के नाम से शुरूअ़ और तमाम तअ़रीफ़ अल्लाह ही के लिए है, अल्लाह के नाम से शुरूअ़ तमाम शुक्र अल्लाह ही के लिए है, अल्लाह के नाम से शुरूअ़ और सारा

एह़सान अल्लाह ही के लिए है, अल्लाह के नाम से शुरूअ़ और सारी क़ुदरत अल्लाह ही के लिए है, अल्लाह के नाम से शुरूअ़ सारी अ़ज़मत अल्लाह ही के लिए है, अल्लाह के नाम से शुरूअ़ और सारी सल्त़नत अल्लाह ही के लिए है,अल्लाह के नाम से शुरूअ़ और सारी दलील अल्लाह ही के लिए है, अल्लाह के नाम से शुरूअ़ और सारी बड़ाई अल्लाह ही के लिए है, अल्लाह के नाम से शुरूअ़ और सारा फ़ख़्र अल्लाह ही के लिए, अल्लाह के नाम से शरूअ़ और सारा क़हर अल्लाह ही के लिए है, अल्लाह के नाम से शुरूअ़ और सारी नेअ़मत अल्लाह ही के लिए है,अल्लाह के नाम से शुरूअ़ और सारी बुज़ुर्गी अल्लाह ही के लिए है, अल्लाह के नाम से शुरूअ़ और सारी सना अल्लाह ही के लिए है, अल्लाह के नाम से शुरूअ़ और अल्लाह ही की मदद से है, बुराई से फेरना और भलाई की क़ूव्वत देना सिर्फ़ अल्लाह के बस में है। जो बुलंद अ़ज़मत वाला है,

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ मेरा पालने वाला अल्लाह है मुझे अल्लाह काफी है मैं ने अल्लाह ही पर भरोसा किया मैंने अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से थामा और अल्लाह के सिवा कोई क़ूव्वत नहीं। अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बड़ा मेहरबान निहायत रह़म वाला है, ऐ हमारे अल्लाह हम तुझ से सवाल करते हैं बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम के वास्ते से और बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम की इ़ज़्ज़तो हुर्मत के वास्ते से बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम की बुज़ुर्गी के वास्ते से, बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम की अ़ज़्मत के वास्ते से बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम के जलाल के वास्ते से, बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम के जमाल के वास्ते से बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम के कमाल के वास्ते से, बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम के जिक्र के वास्ते से, बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम की फ़िक्र के वास्ते से, बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम के इ़ल्म के वास्ते से,

बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम की ह़िक्मत के वास्ते से,
बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम की मअ़रिफ़त के वास्ते से,
बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम की ह़क़ीक़त के वास्ते से,
बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम की नेअ़मत के वास्ते से और
बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम की हैबत के वास्ते से,
बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम के मक़ामो मर्तबा के वास्ते से,
बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम के मलकूत के वास्ते से,
बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम के जबरूत के वास्ते से,
बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम की बड़ाई के वास्ते से,
बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम की सना के वास्ते से,
बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम की रौनक़ के वास्ते से,
बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम की करामत के वास्ते से,
बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम के ग़ल्बवो सल्तनत के वास्ते से,
बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम की बरकत के वास्ते से,
बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम की इ़ज़्ज़त के वास्ते से,
बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम की क़ुव्वत के वास्ते से, और

बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम की क़ुदरत के वास्ते से, ऐ हमारे मअ़बूद तू हमारे तमाम गुनाहों को बख़्श दे और हमारे ऐ़बों को ढ़ांप ले और हमें अपनी और अपने ह़बीब ﷺ की मोह़ब्बत अ़त़ा फ़रमा मेरी इ़ज़्ज़त को बुलंद फ़रमा दे मेरे सीना को खोल दे मेरे काम को आसान करदे और मुझे वहाँ से रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमा जहाँ से गुमान नहीं किया जाता अपने फ़ज़्लो करम के वास्ते से ऐ वह ज़ात जिसका कलाम काफ़ हा या ऐ़न स़ाद, ह़ा मीम ऐ़न सीन क़ाफ़ है और मैं तुझ से सुवाल करता हूँ इ़ज़्ज़त के जलाल के वास्ते से हैबत के जलाल के वास्ते से और अ़ज़मत के जबरूत के वास्ते से कि तू मुझे अपने उन नेक बंदों में से बनादे जिन्हें न कोई ख़ौफ़ है और न कोई ग़म ऐ तमाम रह़म करने वालों में सबसे ज़्यादा मेहरबान तेरी रह़मत का वास्ता है और इस बात का सुवाल करता हूँ कि तू ख़ूब ख़ूब दुरूद नाज़िल फ़रमा हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर और हमारे सरदार

मोहम्मद ﷺ की आलो औलाद पर, इस बात का सुवाल करता हूँ कि मेरा फ़ोलाँ फ़ोलाँ काम बना दे और ऐ हमारे अल्लाह तू हमें सीधे रास्ते की हिदायत अ़ता फ़रमा उनका रास्ता जिन पर तू ने इन्आ़म फ़रमाया उनका रास्ता नहीं जिन पर ग़ज़ब हुवा और न बहके हुवों का । ऐ हमारे अल्लाह तू क़बूल फ़रमा । अल्लाह के नाम से शुरूअ़ और खूब सलाम्ती नाज़िल हो, हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर जो अल्लाह के रसूल हैं, मेरा दुरूदो सलाम पहुँचे माहे कामिल के हुजूर, क़यामत तक और ज़माने की दराज़ी में, अल्लाह की रह़मतें नाज़िल हों उस ज़ात पर जिनकी बुलंद शान है हमारे नबी मोह़म्मद ﷺ की पहचान यह है कि वह रह़मत के साथ साया फ़गन हैं ऐ मेरे आक़ा मुस्त़फ़ा ﷺ अल्लाह के वास्ते कुछ नज़रे करम फ़रमाएं ऐ अल्लाह के राज़ के राज़ ऐ मेरे आक़ा मुस्त़फ़ा ﷺ अल्लाह के वास्ते कुछ नज़्रे करम फ़रमाएं, ऐ अल्लाह के फ़ैज़ का फ़ैज़, ऐ मेरे आक़ा

मुस्त़फ़ा ﷺ अल्लाह के वास्ते कुछ नज़्रे करम फ़रमाएं ऐ अल्लाह के नूर के नूर, ऐ तजल्ली फ़रमाने वाले मेरी ख़स्ता ह़ालत पर रह़म फ़रमाएं, ऐ बुलंद रुतबा वाले मेरी ह़ालत दुरुस्त फ़रमाएं, ऐ अल्लाह के रसूल फ़रयाद है मदद का त़लबगार हूँ ऐ अल्लाह के ह़बीब ﷺ ऐ आप ही पर भरोसा किया जाता है, ऐ अल्लाह के नबी ﷺ आप हमारे सिफ़ारिशी बन जाएं अल्लाह की क़सम आप ऐसे शफ़ीअ़ हैं कि आप की शफ़ाअ़त कभी रद नहीं की जाती है, ऐ मेरे परवरदिगार तू ही अल्लाह है तू हमें लाइलाह इल्लल्लाहु मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह का इ़ल्म अ़त़ा फ़रमा ह़क़ीक़त के लेह़ाज़ से और सच्चाई के एअ़तेबार से, और तू ख़ूब ख़ूब दुरूद नाज़िल फ़रमा तमाम नब्यों और रसूलों के नूर में सबसे ज़्यादह शराफ़तो बुज़ुर्गी वाले पर और तमाम तअ़रीफ़ उस अल्लाह के लिए है जो सारे जहान का पालन हार है ।

# फ़ज़ाएले नक़्श तोहफ़ए रूहानी

जो शख़्स शबे जुमअ़ या रोज़े जुमअ़ त़हारते कामिला के साथ मोअ़त्तर हो कर "सलामे मोहम्मदी ﷺ मअ़ अस्रारे मीम, हा, मीम, दाल" को पढ़े फिर इस नक़्श को पेशे नज़र रखते हुए १०० बार कलमए त़य्यिबा या कोई भी दुरूद शरीफ़ विर्द करे तो उस का दिल दाएमी नूरे ईमान से मुनव्वर होगा उसे मक़्बूल ज़िक्रो फ़िक्र ह़म्दो शुक्र करने की तौफ़ीक़ मिलेगी, वह वस्वसए ख़न्नास से मह़फ़ूज़ हो कर आ़लमे अरवाह़ के फ़ैज़ान से मुस्तफ़ीज़ होगा और अगर इसी तरह मअ़मूल में रखे तो उसे रूही फ़िदाहो महबूब मुस्त़फ़ा ﷺ की ज़ियारते पाक का शरफ़ ह़ासिल होगा, इन्शाअल्लाहु तआ़ला, अगर कोई मरीज़ शबे जुमअ़ या रोज़े जुमअ़ सलामे मोहम्मदी ﷺ पढ़ कर इस नक़्श को लिखे और पानी में डाल कर मह़फ़ूज़ करले फिर रोज़ाना दुरूदे पाक पढ़ कर उस पानी को पिए तो हर मर्ज़ से शिफ़ा ह़ासिल होगी, और अगर कोई परेशाँ ह़ाल शख़्स इस नक़्श को देखते हुए दुरूदे पाक पढ़े फिर बारगाहे इलाही में अपना ह़ाल अ़र्ज़ करे तो उसकी हर परेशानी रफ़अ़ और हर दुआ क़बूल होगी, मोशाहदे के मोत़ाबिक़ इस नक़्श के बेशुमार फ़ुयूज़ो बरकात हैं जो पढ़ने वाले पर ज़ाहिर होजाएंगी। इन्शाअल्लाहु तआ़ला।

# नक़्श तोह़फ़ए रूह़ानी

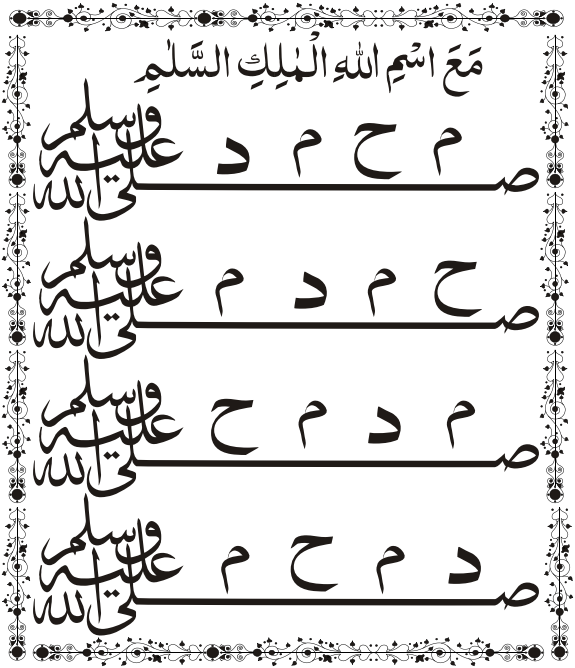
مَعَ اسْمِ اللهِ الْمَلِكِ السَّلٰمِ
صلی اللہ علیہ وسلم م ح م د
صلی اللہ علیہ وسلم ح م د م
صلی اللہ علیہ وسلم م د م ح
صلی اللہ علیہ وسلم د م ح م

# इल्तिमास

अल्लाहो रसूल का क़ुर्ब व रेज़ा ह़ासिल करने और रूह़ानी तरक़्क़ी व क़ल्बी तसकीन के वास्ते और जाहिरी व बतिनी अम्राज़े मोहलिका से मह़फ़ूज़ रहने के लिए दुरूदे रूह़ानी व दुआए क़ल्बी, दुरूदे मोह़म्मदी ﷺ, सलामे मोह़म्मदी ﷺ मअ़ अस्रारे मीम ह़ा मीम दाल और दुरूदे चहेल मीम मन्कूत़ व ग़ैरमन्कूत़, ज़िक्रो फ़िक्रे त़हारते इस्लाम, रूह़ानी अअ़माले शअ़बानो रमज़ान, दुरूदे रूह़ानी बेफ़ैज़ाने बाज़े अश्हब, सलातुल्हसनैन, दुरूदे अ़लवी, दुरूदे फ़ात़िमी, दुरूदे हुसैनी और अस्सलातुर्रूह़ानीयतु बिस्मिल्लाहिल अर्बईन बेफ़ैजिश्शैख़े मुह़यिद्दीन, रूह़ानी दुरूदो दुआ़ व आयाते बस्मलह शरीफ़ह वग़ैरह जैसी रूह़ानी फ़ैजान से मुरत्तब किताबें खुद भी पढ़ें और अह़बाब को भी पढ़ने की दअ़वत दें नीज़ आस्तानए आ़लिया ह़ज़रात मख़्दूमीन सादात चौदहों पीराँ रदि़यल्लाहु अ़न्हुम से मुतअ़ल्लिक़ जुम्ला मत़बूआ़त आप

www.syed14peer.com

पर भी मुलाह़ज़ा कर सकते हैं।

آستانہ حضرات مخدومین سادات چودھوں پیراں (علیہم الرحمۃ والرضوان) الہ آباد

www.syed14peer.com